चौबीस ठाणा चर्चा

[श्री गोम्मटसार जीवकाण्ड के अनुसार]

सम्पादक

पं० मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ

भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद्

भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद् पुष्प संख्या—११३

आशीर्वाद : आचार्यश्री भरतसागर जी महाराज

निर्देशिका : गणिनी आर्यिका स्याद्वादमती माताजी

संयोजन : ब्र० प्रभा पाटनी B.Sc.LLB.

ग्रन्थ : **चौबीस ठाणा चर्चा**

सम्पादक : पं० मोहनलाल शास्त्री

सर्वाधिकार सुरक्षित : भा० अ० वि० परि०

संस्करण : द्वितीय
वीर नि० सं० २५३०, सन् २००३

पुस्तक प्राप्ति-स्थान (१) आचार्य श्री भरतसागरजी महाराज संघ
(२) दिगम्बर जैन महासभा कार्यालय,
ऐशबाग, लखनऊ
(३) श्री सम्मेदशिखरजी

मूल्य : १५.०० रुपये

मुद्रक : बाबूलाल जैन फागुल्ल
महावीर प्रेस भेलूपुर, वाराणसी—१०
फोन : २२७६२१४

आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

चौबीस ठाणा चर्चा

गाथा

गइ-इंदिये च काये, जोये-वेये-कषाय णाणे य।
संजम-दंसण-लेस्सा, भविया-संमत्त-सण्णि-आहारे ॥
गुण-जीवा-पज्जत्ती, पाणा-सण्णा-य-मग्गणा ओय।
उवओगोविय कमसो, वीसं तु परूवणा भणिया ॥
झाणावि य पच्चावि य, जाइ य कुलकोडि-संजुया सव्वे।
गह्णाति जेण भणिया, कमेण चउवीस ठाणाणि ॥

चौबीस ठाणा (स्थानों) के नाम

१	गति	१३	संज्ञित्व
२	इन्द्रिय	१४	आहारक
३	काय	१५	गुणस्थान
४	योग	१६	जीवसमास
५	वेद	१७	पर्याप्ति
६	कषाय	१८	प्राण
७	ज्ञान	१९	संज्ञा
८	संयम	२०	उपयोग
९	दर्शन	२१	ध्यान
१०	लेश्या	२२	आस्त्रव
११	भव्यत्व	२३	जाति
१२	सम्यक्त्व	२४	कुल

चौबीस ठाणा (स्थानों) के उत्तरभेद

१–गति [४]

१. नरकगति, २. तिर्यग्गति, ३. मनुष्यगति, ४. देवगति ।

२–इन्द्रिय [५]

१. एक इन्द्रिय, २. दो इन्द्रिय, ३. तीन इन्द्रिय, ४. चार इन्द्रिय, ५. पाँच इन्द्रिय ।

३–काय [६]

१. पृथ्वीकाय, २. जलकाय, ३. अग्निकाय, ४. वायुकाय, ५. वनस्पतिकाय, ६. त्रसकाय ।

४–योग [१५]

मनोयोग ४—१. सत्यमनोयोग, २. असत्यमनोयोग, ३. उभयमनोयोग, ४. अनुभय-मनोयोग ।

वचनयोग ४—१. सत्यवचनयोग, २. असत्यवचनयोग, ३. उभय-वचनयोग, ४. अनुभयवचनयोग ।

काययोग ७—१. औदारिक काययोग, २. औदारिकमिश्रकाययोग, ३. वैक्रियक काययोग, ४. वैक्रियक मिश्रकाययोग, ५. आहारक काययोग, ६. आहारक मिश्रकाययोग, ७. कार्मण काययोग ।

५–वेद [३]

१. स्त्री-वेद, २. पुरुष-वेद, ३. नपुसंक-वेद ।

६–कषाय [२५]

अनन्तानुबंधी ४—१. क्रोध २. मान, ३. माया, ४. लोभ ।

अप्रत्याख्यान ४—१. क्रोध, २. मान, ३. माया, ४. लोभ।
प्रत्याख्यान ४—१. क्रोध, २. मान, ३. माया, ४. लोभ।
संज्वलन ४—१. क्रोध, २. मान, ३. माया, ४. लोभ।
अकषाय ९—१. हास्य, २. रति, ३. अरति, ४. शोक, ५ भय, ६. जुगुप्सा, ७. स्त्रीवेद, ८. पुरुषवेद, ९. नपुंसकवेद।

७–ज्ञान [८]

१. कुमतिज्ञान, २. कुश्रुतज्ञान, ३. कुअवधिज्ञान, ४. सुमतिज्ञान, ५. सुश्रुतज्ञान, ६. सुअवधिज्ञान, ७. मनःपर्ययज्ञान, ८ केवलज्ञान।

८–संयम [७]

१. असंयम, २. संयमासंयम, ३. सामायिक, ४. छेदोपस्थापना, ५. परिहारविशुद्धि, ६. सूक्ष्मसाम्पराय, ७. यथाख्यात।

९–दर्शन [४]

१. चक्षुदर्शन, २. अचक्षुर्दर्शन, ३. अवधिदर्शन, ४. केवलदर्शन।

१०–लेश्या [६]

१. कृष्ण-लेश्या, २. नील लेश्या, ३. कापोत लेश्या, ४. पीतलेश्या, ५. पद्मलेश्या, ६. शुक्ललेश्या।

११–भव्य [२]

१. भव्यत्व, २. अभव्यत्व।

१२–सम्यक्त्व [६]

१. मिथ्यात्व, २. सासादन, ३. मिश्र, ४. औपशमिक, ५. वेदक , ६. क्षायिक।

१३–संज्ञित्व [२]

१. संज्ञित्व, २. असंज्ञित्व।

१४–आहारक [२]

१. आहारक, २. अनाहारक।

१५–गुणस्थान [१४]

१. मिथ्यात्व, २. सासादन, ३. मिश्र, ४. अविरत, ५. देशव्रत, ६. प्रमत्त, ७. अप्रमत्त, ८. अपूर्वकरण, ९. अनिवृत्तिकरण, १०. सूक्ष्मसाम्पराय, ११. उपशांतमोह, १२. क्षीणमोह, १३. सयोगकेवली, १४. अयोगकेवली।

१६–जीवसमास [१९]

२ पृथ्वीकाय सूक्ष्म, बादर
४ जलकाय सूक्ष्म, बादर
६ अग्निकाय सूक्ष्म, बादर
८ वायुकाय सूक्ष्म, बादर
१० नित्यनिगोद सूक्ष्म, बादर
१२ इतरनिगोद सूक्ष्म, बादर
१३ सप्रतिष्ठित प्रत्येक
१४ अप्रतिष्ठित प्रत्येक
१५ दो इन्द्रिय जीव बादर
१६ तीन इन्द्रिय जीव बादर
१७ चार इन्द्रिय जीव बादर
१८ असैनी ५ इन्द्रिय जीव बादर
१९ सैनी-पंचेन्द्रिय जीव बादर

१७–पर्याप्ति [६]

१. आहार, २. शरीर, ३. इन्द्रिय, ४. श्वासोच्छ्वास, ५. भाषा, ६. मन।

१८–प्राण [१०]

५ इन्द्रिय-प्राण, १ मनोबल, १ वचनबल, १ कायबलप्राण, १ श्वासोच्छ्वास-प्राण, १ आयु-प्राण।

१९–संज्ञा [४]

१. आहार संज्ञा, २. भय संज्ञा, ३. मैथुन संज्ञा, ४. परिग्रह संज्ञा।

२०–उपयोग [१२]

८ ज्ञानोपयोग, ४ दर्शनोपयोग।

२१–ध्यान [१६]

आर्तध्यान ४—१. इष्टवियोगज, २. अनिष्टसंयोगज, ३. पीड़ाचिन्तन, ४. निदानबंध।

रौद्रध्यान ४—१. हिंसानन्द, २. मृषानन्द, ३. चौर्यानन्द, ४ परिग्रहानन्द।

धर्मध्यान ४—१. आज्ञाविचय, २. अपायविचय, ३. विपाकविचय, ४. संस्थानविचय।

शुक्लध्यान ४—१. पृथक्त्ववितर्क, २. एकत्ववितर्क, ३. सूक्ष्म-क्रियाप्रतिपाति, ४. व्युपरतक्रियानिवृत्ति।

२२–आस्रव [५७]

मिथ्यात्व ५—१. एकान्तमिथ्यात्व, २. विनयमिथ्यात्व, ३. विपरीतमिथ्यात्व, ४. संशय-मिथ्यात्व, ५. अज्ञानमिथ्यात्व।

अव्रत १२

६ षट्काय रक्षा नहीं, ५ इन्द्रिय वश नहीं, १ मन वश नहीं।
कषाय २५ पूर्वोक्त। योग १५ पूर्वोक्त

२३–जाति [८४ लाख]

७ लाख पृथ्वीकाय	७ लाख जलकाय
७ लाख अग्निकाय	७ लाख वायुकाय
७ लाख नित्य-निगोद	७ लाख इतर-निगोद
१० लाख वनस्पतिकाय	२ लाख दो इन्द्रिय
२ लाख तीन इन्द्रिय	२ लाख चार इन्द्रिय
४ लाख पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्च	४ लाख नारक
४ लाख देव	१४ लाख मनुष्य

२४–कुल १९९।। लाख कोटि

२२ लाख कोटि पृथ्वीकाय	७ लाख जलकाय
३ लाख अग्निकाय	७ लाख वायुकाय
२८ लाख वनस्पतिकाय	७ लाख दो इन्द्रिय
८ लाख तीन इन्द्रिय	९ लाख चार इन्द्रिय
	१२।। लाख जलचर
१९ लाख थलचर	१२ लाख नभचर
२५ लाख नारक	२६ लाख देव
१४ लाख मनुष्य	

योग—१९९।। लाख करोड़

नोट—योनियों वा कुलों का विशद वर्णन गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा ८९ वा ११३ में देखा जावे।

नरकगति में २४ स्थान

१	गति	नरक
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
११	योग	मन ४, वच ४, वैक्रियक २, कार्मण १
१	वेद	नपुंसक
२३	कषाय	स्त्री-पुरुष-वेद बिना
६	ज्ञान	सुज्ञान ३ कुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
३	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
४	गुणस्थान	१। २। ३। ४। पर्यन्त
१	जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
९	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
९	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य १
५१	आस्रव	स्त्री १, पु० १, औ० २, आ०२ बिना
४	लक्ष जाति	नरक सम्बन्धी
२५	ल० को० कुल	नरक सम्बन्धी

तिर्यग्गति में २४ स्थान

१	गति	तिर्यञ्च
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
११	योग	मन ४, वच ४, औदा २-कार्मण १
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
६	ज्ञान	सुज्ञान ३ कुज्ञान ३
२	संयम	असंयम, देशसंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
५	गुणस्थान	१। २। ३। ४। ५। पर्यन्त
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
९	उपयोग	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३, दर्शन ३
११	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ३
५३	आस्रव	आहा० २, वैक्रि० २, बिना
६२	लक्ष जाति	तिर्यञ्च एकेन्द्री से पचेन्द्रीपर्यन्त
१३४॥	ल० को० कुल	तिर्यञ्च एकेन्द्री से पचेन्द्रीपर्यन्त

मनुष्यगति में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१३	योग	वैक्रियक द्विक बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१४	गुणस्थान	सब
१	जीवसमास	पञ्चेन्द्री सैनी
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१२	उपयोग	सब
१६	ध्यान	सब
५५	आस्रव	वैक्रियक द्विक बिना
१४	लक्ष जाति	मनुष्य सम्बन्धी
१४	ल० को० कुल	मनुष्य सम्बन्धी

देवगति में २४ स्थान

१	गति	देव
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
११	योग	मन. ४, वच. ४, वैक्रि० २-कार्मण १
२	वेद	स्त्री-वेद-पुरुष-वेद
२४	कषाय	नपुँसक-वेद बिना
६	ज्ञान	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
३	लेश्या	पी० प० शु० पर्याप्त अपेक्षा
६	लेश्या	सब अपर्याप्त अपेक्षा
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
४	गुणस्थान	१। २। ३। ४। पर्यन्त
१	जीवसमास	पञ्चेन्द्री सैनी
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
९	उपयोग	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३, दर्शन ३
१०	ध्यान	आर्त. ४, रौद्र. ४, धर्म्य. २
५३	आस्त्रव	औदा. २, आहा. २, बिना
४	लक्ष जाति	देव सम्बन्धी
२६	ल० को० कुल	देव सम्बन्धी

एकेन्द्रिय [५ स्थावरों] में २४ स्थान

१	गति	तिर्यञ्च
१	इन्द्रिय	एक-इन्द्रिय
५	काय	त्रस बिना
३	योग	औ० का०, औ० मिश्र-कार्मण
१	वेद	नपुँसक
२३	कषाय	स्त्रीवेद, पुरुषवेद बिना
२	ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१	संयम	असंयम
१	दर्शन	अचक्षुर्दर्शन
३	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१	संज्ञित्व	असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१४	जीवसमास	एकेन्द्री-सम्बन्धी
४	पर्याप्ति	भाषा, मन बिना
४	प्राण	स्पर्शन, काय, आयु, स्वास
४	संज्ञा	सब
३	उपयोग	कुज्ञान २ अचक्षुद० १
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
३८	आस्रव	मि० ५ अ० ७ क० २३ यो० ३
५२	लक्ष जाति	एकेन्द्री सम्बन्धी
६७	ल० को० कुल	एकेन्द्री सम्बन्धी

दो—इन्द्रिय में २४ स्थान

१	गति	तिर्यञ्च
१	इन्द्रिय	दो इन्द्रिय
१	काय	त्रस
४	योग	औ० २, अनु० व, कार्मण
१	वेद	नपुँसक
२३	कषाय	स्त्रीवेद, पुरुषवेद बिना
१	संयम	असंयम
२	ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१	दर्शन	अचक्षुर्दर्शन
३	लेश्या	कृष्ण, नील, कपोत
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१	सैनी	असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१	जीवसमास	दो इन्द्रिय
५	पर्याप्ति	मन बिना
६	प्राण	इन्द्रिय २, काय, वचन-श्वास, आयु
४	संज्ञा	सब
३	उपयोग	२ कुज्ञान, १ अचक्षुर्दर्शन
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४०	आस्रव	मि० ५ अ ८ क० २३ यो० ४
२	लक्ष जाति	दो-इन्द्रिय सम्बन्धी
७	ल० को० कुल	दो-इन्द्रिय सम्बन्धी

तीन—इन्द्रिय में २४ स्थान

१	गति	तिर्यञ्च
१	इन्द्रिय	तीन इन्द्रिय
१	काय	त्रस
४	योग	औ० २, अनुभव वच० १, का० १
१	वेद	नपुँसक
२३	कषाय	स्त्री-पुरुष वेद बिना
२	ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१	संयम	असंयम
१	दर्शन	अचक्षुर्दर्शन
३	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१	सैनी (संज्ञित्व)	असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१	जीवसमास	तीन इन्द्रिय
५	पर्याप्ति	मन बिना
७	प्राण	इन्द्रिय ३, काय १, वचन १, श्वास १, आयु १
४	सज्ञा	सब
३	उपयोग	कुज्ञान २, अचक्षुर्दर्शन
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४१	आस्रव	मि० ५ अ० ९ क० २३ यो० ४
२	लक्ष जाति	तीन-इन्द्रिय सम्बन्धी
८	ल० को० कुल	तीन-इन्द्रिय सम्बन्धी

चार इन्द्रिय में २४ स्थान

१	गति	तिर्यञ्च
१	इन्द्रिय	चौ इन्द्रिय
१	काय	त्रस
४	योग	औ० २, अनुभयवचन १, कार्मण १
१	वेद	नपुँसक
२३	कषाय	स्त्री-पुरुष वेद बिना
२	ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन
३	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१	सैनी (संज्ञित्व)	असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१	जीवसमास	चौ-इन्द्रिय
५	पर्याप्ति	मन बिना
८	प्राण	इन्द्रिय ४, काय १, वचन १, श्वास १, आयु १
४	संज्ञा	सब
४	उपयोग	ज्ञान २, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४२	आस्रव	मि० ५ अ० १० क० २३ यो० ४
२	लक्ष जाति	चार-इन्द्रिय सम्बन्धी
९	ल० को० कुल	चार-इन्द्रिय सम्बन्धी

पंचेन्द्रिय में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	सैनी (संज्ञित्व)	सब
२	आहारक	सब
१४	गुणस्थान	सब
२	जीवसमास	सैनी, असैनी-पंचेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१२	उपयोग	सब
१६	ध्यान	सब
५७	आस्रव	सब
२६	लक्ष जाति	पंचेन्द्रिय
१०८॥	ल० को० कुल	पंचेन्द्रिय

त्रसकाय में २४ स्थान

४	गति	दे०, म०, न०, तिर्यञ्च,
४	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय ज़ाति बिना
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	स्त्री, पुरुष, नपुँसक
२५	कषाय	सब
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१४	गुणस्थान	सब
५	जीवसमास	त्रस सम्बन्धी
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१२	उपयोग	ज्ञान ८, दर्शन ४
१६	ध्यान	सब
५७	आस्त्रव	सब
३२	लक्ष जाति	३२ लाख
१३२॥	ल० को० कुल	त्रसों के सभी

सत्य व अनुभय-मन-वचन योग में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्री
१	काय	त्रस
१	योग	स्वकीय नोट–अनुभय वचन योग[१]
३	वेद सब ९ वें तक	,,
२५	कषाय	,,
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१३	गुणस्थान	अयोग बिना
१	जीवसमास	पञ्चेन्द्री सैनी
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१२	उपयोग	सब
१५	ध्यान	व्युपरतक्रियानि० बिना
४३	आस्रव	मि० ५ अ० १२ क० २५ योग १
२६	लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री सर्व [स्वकीय]
१०८॥	ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री सर्व [स्वकीय]

१. अनुभय वचन योगमें यह विशेषता है कि यह विकलचतुष्क में भी पाया जाता है।

असत्य व उभय–मन–वचन योग में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
१	योग	स्वकीय
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
७	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
७	संयम	सब
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
१	सैनी (संज्ञित्व)	सैनी (संज्ञित्व)
१	आहारक	आहारक
१२	गुणस्थान	सयोग, अयोग बिना
१	जीवसमास	सैनी, पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१४	ध्यान	अन्तके २, शुक्ल बिना
४३	आस्रव	मि० ५ अ० १२ क० २५ योग १
२६	लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री सब
१०८॥	ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री सब

औदारिक काययोग में २४ स्थान

२	गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१	योग	औदारिक
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१३	गुणस्थान	अयोग बिना
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
२	उपयोग	सब
१५	ध्यान	व्युपरतिक्रियानि० बिना
४३	आस्त्रव	मि० ५ अ० १२ क० २५ योग० १
७६	लक्ष जाति	तिर्यञ्च मनुष्य
१४८।।	ल० को० कुल	तिर्यञ्च मनुष्य

औदारिकमिश्रकाययोग में २४ स्थान

२	गति	तिर्यञ्च मनुष्य
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१	योग	स्व (औदारिक मिश्र)
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
६	ज्ञान	विभंग, मन:पर्यय बिना
२	संयम	असंयम, यथाख्यात
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	द्रव्य, कापोत, भाव ६
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
४	सम्यक्त्व	उपशम, मिश्र बिना
२	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
४	गुणस्थान	१, २, ४, १३,
१९	जीवसमास	सब
३	पर्याप्ति	आहार-शरीर-इन्द्रिय
७	प्राण	मन, वच, श्वास बिना
४	सज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ४
१०	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य १ शुक्ल १
४३	आस्त्रव	मि० ५ अ० १२ क० २५ योग १
७६	लक्ष जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य
१४८॥	ल० को० कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य

वैक्रियककाययोग में २४ स्थान

२	गति	देव, नरक
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१	योग	वैक्रियक काययोग
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
६	ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
४	गुणस्थान	१, २, ३, ४
१	जीवसमास	पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
९	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१०	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य० २
४३	आस्त्रव	मि० ५ अ० १२ क० २५ योग १
८	लक्ष जाति	देव, नारकी
५१	ल० को० कुल	देव, नारकी

वैक्रियकमिश्रकाययोग में २४ स्थान

२	गति	देव, नरक
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१	योग	वैक्रियक मिश्र०
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
५	ज्ञान	सुज्ञान आदि के ३, कुज्ञान आदि २
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
६	लेश्या	द्रव्य, कापोत, भाव ६
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
५	सम्यक्त्व	मिश्र बिना
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
२	आनाहारक	आहारक बिना
३	गुणस्थान	१, २, ४
१	जीवसमास	पञ्चेन्द्री
३	पर्याप्ति	मन-वचन, श्वांस बिना
७	प्राण	मन, वच, श्वास बिना
४	संज्ञा	सब
८	उपयोग	ज्ञान ५, दर्शन ३
९	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य १
४३	आस्त्रव	मि० ५ अ० १२ क० २५ योग १
८	लक्ष जाति	देव, नारकी
५१	ल० को० कुल	देव, नारकी

आहारक वा आहारकमिश्र काययोग में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
१	योग	स्व स्व योग
१	वेद	पुरुष
११	कषाय	संज्व० ४, हास्य ६, वेद १
३	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि
२	संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना
३	दर्शन	चक्षु; अचक्षु, अवधि
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
२	सम्यक्त्व	क्षायिक, वेदक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहरक
१	गुणस्थान	प्रमत्त
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री
३	पर्याप्ति	सब
१०/७	प्राण	स्वकीय
४	संज्ञा	सब
६	उपयोग	सुज्ञान ३, दर्शन ३
७	ध्यान	आर्त ३, धर्म्य ४
१२	आस्रव	कषा० ११ योग १ स्व स्व
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

कार्मणकाययोग में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१	योग	स्व [कार्मणकाय योग]
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
६	ज्ञान	कुअवधि, मनःपर्यय बिना
२	संयम	असंयम, यथाख्यात
४	दर्शन	सब
१	लेश्या	द्रव्य शुक्ल, भाव ६
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
५	सम्यक्त्व	मिश्र बिना
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
१	आहारक	अनाहारक
४	गुणस्थान	१, २, ४, १३
१९	जीवसमास	सब
०	पर्याप्ति	०
७	प्राण	मन, वच, श्वास बिना
४	संज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ४
११	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य २, शुक्ल १
४३	आस्रव	मि० ५ अ० १२ क० २५ योग १
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल० को० कुल	सब

भाव–स्त्रीवेद में २४ स्थान

३	गति	देव, मनुष्य, तिर्यञ्च
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१३	योग	आहारक द्विक बिना
१	वेद	स्त्रीवेद
२३	कषाय	पुरुष, नपुंसक बिना
६	ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
४	संयम	अ० दे० सामा० छेदोपस्थापना
३	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
९	गुणस्थान	आदि के ९
२	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री, अ० पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
९	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१३	ध्यान	अन्त के ३ बिना
५३	आस्रव	मि० ५ अ० १२ क० २३ योग १३
२२	लक्ष जाति	देव, मनुष्य, तिर्यञ्च
८३॥	ल० को० कुल	देव, मनुष्य, तिर्यञ्च

भाव–पुरुष वेद में २४ स्थान

३	गति	देव, मनुष्य, तिर्यञ्च
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
१	वेद	पुरुष
२३	कषाय	स्त्री, नपुँसक बिना
७	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
५	संयम	सूक्ष्म सां० यथा० बिना
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
९	गुणस्थान	आदि के ९
२	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री, असैनी पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
१०	उपयोग	केवल द० ज्ञान० २ बिना
१३	ध्यान	अन्त के ३ बिना
५५	आस्रव	स्त्री, नपुँसक बिना
२२	लक्ष जाति	देव मनुष्य, तिर्यञ्च
८३॥	ल०को०कुल	देव, मनुष्य, तिर्यञ्च

भाव–नपुँसक वेद में २४ स्थान

३	गति	नरक, पशु, मनुष्य
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१३	योग	आहारक २ बिना
१	वेद	नपुँसक
२३	कषाय	स्त्री, पुरुष वेद बिना
६	ज्ञान	मन:पर्यय, केवल बिना
४	संयम	अ०, दे०, सामा०, छेदोपस्थापना
३	दर्शन	केवल बिना
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
९	गुणस्थान	आदि के ९
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
९	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१३	ध्यान	अन्त के ३ बिना
५३	आस्रव	आहारक द्विक, स्त्रीवेद, पुरुष वेद बिना
८०	लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य
१७३॥	ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य

अनन्तानुबन्धिचतुष्क में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
१०	कषाय	हास्यादि ९, स्व स्व कषाय १
३	ज्ञान	कुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
२	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
२	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
२	गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
५	उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४०	आस्रव	मि० ५ अ० १२ क० १० योग १३
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल० को० कुल	सब

अप्रत्याख्यानचतुष्क में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
१०	कषाय	हास्यादि ९, स्वस्व कषाय १
३	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवल बिना
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व,
४	सम्यक्त्व	मिश्र, उप, क्षायिक, वेदक
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व,
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
२	गुणस्थान	३, ४
१	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
१०	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य २
३५	आस्रव	अ० १२ क १०, योग १३
२६	लक्ष जाति	देव ४, नारकी ४, पशु ४, मनुष्य १४
१०८॥	ल० को० कुल	देव, नारकी, पशु, मनुष्य

प्रत्याख्यान ४ कषाय में २४ स्थान

२	गति	मनुष्य, पशु
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
९	योग	मन ४, वचन ४, औ० १
३	वेद	सब
१०	कषाय	हास्यादि ९, स्व १
३	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि
१	संयम	संयमासंयम
३	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	देशव्रत
१	जीवसमास	सैनी पंचेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
११	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ३
३०	आस्रव	अ० ११ क० १०, योग ९
१८	लक्ष जाति	मनुष्य, पशु
५७॥	ल० को० कुल	मनुष्य, पशु

संज्वलनत्रिक में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
११	योग	मन ४, वचन ४, औ० १, आहा २
३	वेद	सब
१०	कषाय	हास्यादि ९, स्व स्व १
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
३	संयम	सामा०, छेदो, परिहार०
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
४	गुणस्थान	६, ७, ८, ९
१	जीवसमास	सैनी पंचेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
८	ध्यान	आर्त ३, धर्म्य ४, शुक्ल १
२१	आस्त्रव	योग ११, कषाय १०
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

संज्वलनलोभ में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
११	योग	मन ४, वचन ४, औ० १, आहा २
३/०	वेद	सर्व वा वेदरहित
१०	कषाय	हास्यादि ९, सूक्ष्मलोभ १
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
४	संयम	सामा० छेदो० परिहार० सूक्ष्म०
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
३	लेश्या	शुभ
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
५	गुणस्थान	६ से १० तक
१	जीवसमास	पंचेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
८	ध्यान	आर्त ३, धर्म्य ४, शुक्ल १
२१	आस्रव	योग ११, कषाय १०
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

हास्यादि षट् में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२०	कषाय	क्रोधादि १६, वेद ३, हास्यादि स्व १
७	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
५	संयम	सूक्ष्म, यथाख्यात बिना
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
८	गुणस्थान	आठ पर्यन्त
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१३	ध्यान	आ० ४, रौ० ४, ध० ४, शु०१
५२	आस्रव	मि० ५ अ०१२ क० २० योग १५
८४	लक्ष जाति	सब ८४ लाख
१९९॥	ल० को० कुल	सब ८४ लाख

कुमति–कुश्रुत ज्ञान में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
१	ज्ञान	स्व, स्व
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
२	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
२	गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
३	उपयोग	ज्ञान स्व स्व १, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५५	आस्रव	आहारक द्विक बिना
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल० को० कुल	सब

कुअवधिज्ञान में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१०	योग	म ४, व ४, औ० १, वं० १
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
३	ज्ञान	कुअवधि पर्यन्त
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
२	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
२	गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
५	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५२	आस्रव	मि० ५ अ० १२ क० २५ यो० १०
२६	लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री सब
१०८॥	ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री सब

मति–श्रुतज्ञान में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनंतानुबंधी ४ बिना
१	ज्ञान	स्व (मति, श्रुत)
७	संयम	सब
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
९	गुणस्थान	४ से १२ तक
१	जीवसमास	सैनी, पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
४	उपयोग	ज्ञान १, दर्शन ३
१४	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, ध० ४, शु० २
४८	आस्रव	अ० १२, क० २१ योग १५
२६	लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री सब
१०८॥	ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री सब

अवधिज्ञान में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनंतानुबंधी ४ बिना
३	ज्ञान	अवधिज्ञान तक ३
७	संयम	सब
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
९	गुणस्थान	४ से १२ तक
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
१४	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, ध० ४, शु० २
४८	आस्रव	अ० १२, क० २१ योग १५
२६	लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री
१०८॥	ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री

मनःपर्ययज्ञान में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
९	योग	मन ४, वचन ४, औ० १
१	वेद	पुरुष
११	कषाय	संज्व० ४, हास्य ६, पुरु० १
१	ज्ञान	मनःपर्यय
४	संयम	सा०, छे०, सू०, यथा०
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
७	गुणस्थान	६ से १२ तक
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
४	उपयोग	ज्ञान १, दर्शन ३
९	ध्यान	आर्त ३, धर्म्य ४, शु० २
२०	आस्रव	योग ९, कषाय ११
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

केवलज्ञान में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
७	योग	मन २, वचन २, औ० २, कार्मण० १
०	वेद	०
०	कषाय	०
१	ज्ञान	केवलज्ञान
१	संयम	यथाख्यात
१	दर्शन	केवलदर्शन
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	क्षायिक
०	संज्ञित्व	० ० ०
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
२	गुणस्थान	सयोग, अयोग
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
४	प्राण	मन० वच० श्वास० आयु
०	सज्ञा	० ० ०
२	उपयोग	केवलज्ञान १, केवलदर्शन १
२	ध्यान	अन्त के शुक्ल २
७	आस्रव	योग (ऊपर अंकित)
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

सामायिक छेदोपस्थापना संयम में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
११	योग	मन ४, वचन ४, औ० १, आहारक २
३	वेद	सब
१३	कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ९
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
१	संयम	स्व स्व (सामा०, छेदो०)
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
३	लेश्या	पीत, पद्म; शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
४	गुणस्थान	६ से ९ तक
१	जीवसमास	सैनी, पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
८	ध्यान	आर्त ३, धर्म्य ४, शुक्ल १
२४	आस्रव	कषाय १३, योग ११
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

परिहारविशुद्धि संयम में १४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
९	योग	मन ४, वचन ४, औ० १
१	वेद	पुरुष
११	कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ६, पुरुष १
३	ज्ञान	मत्यादि
१	संयम	परिहारविशुद्धि
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
३	लेश्या	पीत, पद्म; शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
२	सम्यक्त्व	क्षायिक, वेदक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
२	गुणस्थान	प्रमत्त, अप्रमत्त
१	जीवसमास	सैनी, पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
७	ध्यान	आर्त ३, धर्म्य ४
२०	आस्रव	कषाय ११, योग ९
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

सूक्ष्मसाम्परायसंयम में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
९	योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १
०	वेद	०
१	कषाय	संज्वलन लोभ
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
१	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
२	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	१० बां
१	जीवसमास	सैनी, पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
१	संज्ञा	परिग्रह
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१	ध्यान	प्रथम शुक्ल
१०	आस्रव	संज्वलन क० १, योग ९
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

यथाख्यातसंयम में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
११	योग	मन ४, वचन ४, औ० २, का० १
१	वेद	० ० ०
०	कषाय	० ० ०
५	ज्ञान	मत्यादि यथायोग्य
१	संयम	यथाख्यात
४	दर्शन	सब
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
२	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
४	गुणस्थान	११ से १४ तक
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
०	सज्ञा	० ० ०
९	उपयोग	ज्ञान ५, दर्शन ४
४	ध्यान	शुक्ल ४
१	आस्रव	योग ११
१४	लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री सब
१४	ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री सब

संयमासंयम में २४ स्थान

२	गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
९	योग	मन ४, वचन ४, औ० १
३	वेद	सब
१७	कषाय	प्रत्या० ४, सं० ४, नो० ९
३	ज्ञान	मति, श्रुति, अवधि
१	संयम	संयमासंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	देशव्रत
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
११	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ३
३७	आस्रव	अ० ११ क० १७ योग ९
१८	लक्ष जाति	पशु, मनुष्य
५७॥	ल० को० कुल	पशु, मनुष्य

असंयम में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
६	ज्ञान	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
४	गुणस्थान	१ से ४ तक
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
९	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१०	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य २
५५	आस्रव	मि० ५ अ० १२ क० २५ यो० १३
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल० को० कुल	सब

चक्षुर्दर्शन में २४ स्थान

४	गति	सब
२	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री, चौइन्द्री
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
७	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
७	संयम	सब
१	दर्शन	चक्षुर्दर्शन
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१२	गुणस्थान	१२ पर्यन्त
३	जीवसमास	चौ, इ० १, असै० २ पंचे० सै
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
८	उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन १
१४	ध्यान	आ० ४, रौ० ४, ध० ४, शु० २
५७	आस्रव	सर्व
२८	लक्ष जाति	चौइन्द्री, पञ्चेन्द्री
११७॥	ल० को० कुल	चौइन्द्री, पञ्चेन्द्री

अचक्षुर्दर्शन में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
७	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
७	संयम	सब
१	दर्शन	अचक्षुर्दर्शन
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक १, अनाहारक १
१२	गुणस्थान	१२ पर्यन्त
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
८	उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन १
१४	ध्यान	आ० ४, रौ० ४, ध० ४, शु० २
५७	आस्रव	सब
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल० को० कुल	सब

अवधिदर्शन में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनंतानुबन्धी ४ बिना
४	ज्ञान	सुज्ञान
७	संयम	सब
१	दर्शन	अवधिदर्शन
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
९	गुणस्थान	४ से १२ तक
१	जीवसमास	सैनी, पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
५	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन १
१४	ध्यान	अन्तके २ शुक्ल बिना
४८	आस्रव	मि० ५, क ४, बिना
२६	लक्ष जाति	मनु दे० ति०न० (से०पं)
१०८॥	ल० को० कुल	मनु दे० ति० नं० (से०पं)

केवलदर्शन में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
७	योग	म० २, व० २, औ० २, का० १
०	वेद	० ० ०
०	कषाय	० ० ०
१	ज्ञान	केवलज्ञान
१	संयम	यथाख्यात
१	दर्शन	केवलदर्शन
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	क्षायिक
०	संज्ञित्व	० ० ०
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
२	गुणस्थान	१३-१४
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
४	प्राण	काय १ वच १ श्वास १ आयु १
०	संज्ञा	० ० ०
२	उपयोग	केवलज्ञान १, केवलदर्शन १
२	ध्यान	अन्तके २ शुक्ल
७	आस्रव	योग ७
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

कृष्ण, नील, कापोत लेश्या में २४ स्थान

३	गति	देव बिना (पर्याप्त अपेक्षा)
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
६	ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
१	लेश्या	स्व (कृष्ण, नील, कापोत)
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
४	गुणस्थान	१ से ४ तक
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
९	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१०	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य २
५५	आस्रव	आहारक २ बिना
८०	लक्ष जाति	देव बिना
१७३॥	ल० को० कुल	देव बिना

पीत, पद्म लेश्या में २४ स्थान

३	गति	देव, मनुष्य, पशु
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
७	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
५	संयम	सूक्ष्मसा०, यथाख्यात बिना
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
१	लेश्या	स्व (पीत, पद्म)
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२/१	संज्ञित्व	पीतमें संज्ञित्व, असंज्ञित्व दोनों, पद्ममें सै० १
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
७	गुणस्थान	७ पर्यन्त
२/१	जीवसमास	पीतमें सै० अ० दो, पद्म में सै० १
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१२	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ४
५७	आस्रव	सब
२२	लक्ष जाति	देव पशु, मनुष्य
८३॥	ल० को० कुल	देव पशु, मनुष्य

शुक्ललेश्या से २४ स्थान

३	गति	देव, मनुष्य, पशु
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
१	लेश्या	शुक्ल
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१३	गुणस्थान	१३ पर्यन्त
१	जीवसमास	सैनी, पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१२	उपयोग	सब
१५	ध्यान	अन्तका शुक्ल० १ बिना
५७	आस्रव	सब
२२	लक्ष जाति	देव, मनुष्य, पशु
८३॥	ल० को० कुल	देव, मनुष्य, पशु

भव्यत्व में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	संज्ञित्व	दोनों
२	आहारक	दोनों
१४	गुणस्थान	सब
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१२	उपयोग	सब
१६	ध्यान	सब
५७	आस्रव	सब
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल० को० कुल	सब

अभव्यत्व में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
३	ज्ञान	कुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	अक्षु, अचक्षु
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	अभव्यत्व
१	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
२	संज्ञित्व	सब
२	आहारक	सब
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
५	उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५५	आस्रव	आहारक २ बिना
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल० को० कुल	सब

मिथ्यात्व सम्यक्त्व में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१३	योग	आहारक द्विक बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
३	ज्ञान	कुज्ञान
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु दो,
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
५	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५५	आस्रव	आहारक द्विक बिना
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल० को० कुल	सब

मिश्रसम्यक्त्व में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१०	योग	प० ४, व० ४, औ० १, वे० १
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनंतानुबन्धी ४ बिना
३	ज्ञान	मिश्रज्ञान
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	मिश्रसम्यक्त्व
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	मिश्र
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
६	उपयोग	मिश्रज्ञान ३, दर्शन ३
९	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य १
४३	आस्रव	अ० १२, क० २१, यो० १०
२६	लक्ष जाति	मनुष्य, देव, नारकी, पशु
१०८॥	ल० को० कुल	मनुष्य, देव, नारकी, पशु

सासादन सम्यक्त्व में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
३	ज्ञान	कुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु दो
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	सासादन
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	सासादन
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
५	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५०	आस्रव	मि० ५ अ० २ बिना
२६	लक्ष जाति	मनुष्य, देव, नारकी, पशु
१०९॥	ल० को० कुल	मनुष्य, देव, नारकी, पंचे०

उपशम सम्यक्त्व में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१२	योग	आहारक २, औदा० मि० बिना
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनंतानुबन्धी बिना
४	ज्ञान	मत्यादि ४
६	संयम	परिहारविशुद्धि बिना
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	उपशमसम्यक्त्व
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
८	गुणस्थान	चौथे से ११ पर्यन्त
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१३	ध्यान	आ० ४, शु० १, रौ० ४, ध० ४
४५	आस्रव	अ० १२, क० २१, यो० १२
२६	लक्ष जाति	देव, मनुष्य, पशु, नारकी
१०८॥	ल० को० कुल	देव, मनुष्य, पशु, नारकी

क्षयोपशम सम्यक्त्व में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनन्तानुबंधी बिना
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
५	संयम	सूक्ष्म० यथा० बिना
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	क्षयोपशम
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
४	गुणस्थान	४, ५, ६, ७
१	जीवसमास	पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१२	ध्यान	आ० ४, रौ० ४, ध० ४,
४८	आस्रव	अ० १२, क० २१, यो० १५
२६	लक्ष जाति	मनुष्य, देव, न०, पशु
१०८॥	ल० को० कुल	मनुष्य, देव, न०, पशु

क्षायिक सम्यक्त्व में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनन्तानुबन्धी बिना
५	ज्ञान	३, कुज्ञान बिना
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	क्षायिक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
११	गुणस्थान	४/१४ पर्यन्त
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
९	उपयोग	सुज्ञान ५, दर्शन ४
१६	ध्यान	सब
४८	आस्त्रव	अ० १२, क० २१, यो० १५
२६	लक्ष जाति	देव, मनुष्य, ना०, पं०, पशु
१०८॥	ल० को० कुल	देव, मनुष्य, ना०, पं०, पशु

संज्ञी में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
७	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
७	संयम	सब
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१२	गुणस्थान	१२ पर्यन्त
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१४	ध्यान	शुक्ल २ बिना
५७	आस्रव	सब
२६	लक्ष जाति	देव, मनुष्य, ना०, पं०, पशु
१०९॥	ल० को० कुल	देव, मनुष्य, न०, पं०, पशु

असंज्ञी में २४ स्थान

१	गति	तिर्यञ्च
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
४	योग	औ० २, का० १, अनु० वच० १
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
२	ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
४	लेश्या	कृष्ण, नील, कापो, पीत
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
२	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
१	संज्ञित्व	असंज्ञित्व
२	आहारक	सब
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१८	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री बिना
५	पर्याप्ति	मन बिना
९	प्राण	मन बिना
४	संज्ञा	सब
४	उपयोग	कुज्ञान २, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४५	आस्त्रव	मि० ५, अ० ११, क० २५, यो० ४
६२	लक्ष जाति	असैनी तिर्यञ्च
१३४॥	ल० को० कुल	असैनी तिर्यञ्च

आहारक में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१४	योग	कार्मण बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६	सम्यक्त्व	सब
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१३	गुणस्थान	१३ पर्यन्त
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१२	उपयोग	सब
१५	ध्यान	अन्त का शुक्ल बिना
५६	आस्रव	कार्मण बिना
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल० को० कुल	सब

अनाहारक में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१	योग	कार्मण
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
६	ज्ञान	विभंग, मन:पर्यय बिना
२	संयम	असंयम, यथाख्यात
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
५	सम्यक्त्व	मिश्र बिना
२	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
१	आहारक	अनाहारक
५	गुणस्थान	१, २, ४, १३, १४
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
७	प्राण	मन, वचन, स्वास बिना
४	संज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ४
११	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य १, शु० २
४३	आस्त्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, यो० १
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल० को० कुल	सब

मिथ्यात्व-गुणस्थान में २४ स्थान

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
३	ज्ञान	कुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेश्या	सब
२	भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
२	संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
५	उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४,
५५	आस्रव	आहारक २ बिना
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल० को० कुल	सब

सासादन गुणस्थान में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रसकाय
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
३	ज्ञान	कुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	सासादन
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	सासादन
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
५	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५०	आस्रव	अ० १२, क० २५, योग १३
२६	लक्ष जाति	सब पञ्चेन्द्री
१०८॥	ल० को० कुल	सब पञ्चेन्द्री

मिश्र–गुणस्थान में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
१०	योग	मन ४, वचन ४, औदा० १, वै० १
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनन्तानुबन्धी बिना
३	ज्ञान	सुज्ञान-कुज्ञान बिना
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	अवधि, केवल बिना
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	मिश्रसम्यक्त्व
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	मिश्र
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
५	उपयोग	मिश्रज्ञान ३, दर्शन २
९	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य १
४३	आस्रव	अ० १२, क० २१, योग १०
२६	लक्ष जाति	सब पञ्चेन्द्री
१०८॥	ल० को० कुल	सब पञ्चेन्द्री

अविरतसम्यक्त्व–गुणस्थान में २४ स्थान

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१	काय	त्रस
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
३	ज्ञान	सुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१	सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	अविरति
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
१०	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य २
४६	आस्रव	अ० १२, क० २१, योग १३
२६	लक्ष जाति	सब पञ्चेन्द्री
१०८॥	ल० को० कुल	सब पञ्चेन्द्री

देशव्रत–गुणस्थान में २४ स्थान

२	गति	पशु, मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
९	योग	म० ४, व० ४, औ० १
३	वेद	सब
१७	कषाय	अनं ४, अप्र० ४ बिना
३	ज्ञान	सुज्ञान ३
१	संयम	संयमासंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	देशव्रत
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
११	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ३
३७	आस्रव	अ० ११, क० १७, योग ९
१८	लक्ष जाति	मनुष्य १४, पशु ४
५७॥	ल० को० कुल	मनुष्य १४, पशु ४३

प्रमत्त–गुणस्थान में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
११	योग	म० ४, व० ४, औ० १, आहा० २
३	वेद	द्रव्यपुरुष, भावभेद ३
१३	कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ९
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
३	संयम	सामा०, छेदो०, परि०
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	प्रमत्त
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
७	ध्यान	आर्त ३, धर्म्य ४
२४	आस्रव	कषाय १३, योग ११
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

अप्रमत्त–गुणस्थान में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
९	योग	म० ४, व० ४, औ० १
३	वेद	द्रव्यपुरुष, भावभेद ३
१३	कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ९
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
३	संयम	सामा०, छेदो०, परि०
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	अनाहारक
१	गुणस्थान	अप्रमत्त
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
३	संज्ञा	भय, मैथुन, परि०
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
४	ध्यान	धर्म्य ४
२२	आस्रव	कषाय १३, योग ९
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

अपूर्वकरण–गुणस्थान में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
९	योग	म० ४, व० ४, औ० १
३	वेद	द्रव्यपुरुष, भावभेद ३
१३	कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ९
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
२	संयम	सामा० १, छेदो० १
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
२	सम्यक्त्व	औपशम, क्षायिक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	अपूर्वकरण
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
३	सज्ञा	आहार बिना
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१	ध्यान	पृथक्त्ववितर्कविचार
२२	आस्रव	कषाय १३, योग ९
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

अनिवृत्तिकरण–गुणस्थान में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
९	योग	म० ४, व० ४, औ० १
३	वेद	द्रव्यपुरुष, भावभेद ३
७	कषाय	संज्वलन ४, वेद ३
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
२	संयम	सामा० १, छेदो० १
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
२	सम्यक्त्व	औपशम, क्षायिक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
२	संज्ञा	मैथुन, परिग्रह
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१	ध्यान	पृथक्त्ववितर्कवीचार
१६	आस्रव	कषाय ७, योग ९
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
९	योग	म० ४, व० ४, औ० १
०	वेद	० ० ०
१	कषाय	संज्वलन (सूक्ष्म) लोभ
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
१	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
२	सम्यक्त्व	औपशमिक, क्षायिक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	सूक्ष्मसाम्पराय
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
१	संज्ञा	परिग्रह (सूक्ष्मलोभ)
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१	ध्यान	पृथक्त्ववितर्कवीचार
१०	आस्रव	कषाय १, योग ९
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

उपशांतकषाय गुणस्थान में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
९	योग	म० ४, व० ४, औ० १
०	वेद	० ० ०
०	कषाय	० उदयाभावापेक्षया
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
१	संयम	यथाख्यात
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
२	सम्यक्त्व	उपशम
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	उपशान्तकषाय
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
१	संज्ञा	० कार्याभावत्वात्
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१	ध्यान	पृथक्त्ववितर्कवीचार
९	आस्रव	योग ९
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

क्षीणकषाय-गुणस्थान में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
९	योग	म० ४, व० ४, औ० १
०	वेद	० ० ०
०	कषाय	० ० ०
४	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
१	संयम	यथाख्यात
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	क्षायिक
१	संज्ञित्व	संज्ञित्व
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	क्षीणकषाय
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
०	सज्ञा	० ० ०
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१	ध्यान	एकत्ववितर्कवीचार
९	आस्रव	योग ९
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

सयोगकेवली–गुणस्थान में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
७	योग	सत्यमनवच २, अनुभय २ औदारिक २, कार्मण १
०	वेद	० ० ०
०	कषाय	० ० ०
१	ज्ञान	केवलज्ञान
१	संयम	यथाख्यात
१	दर्शन	केवलदर्शन
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	क्षायिक
०	संज्ञित्व	० ० ०
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	सयोगकेवली [अपे० द्रव्यमन]
१	जीवसमास	पञ्चेन्द्री
६	पर्याप्ति	सब
४	प्राण	वच, काय, श्वास, आयु
०	सज्ञा	० ० ०
२	उपयोग	केवलज्ञान, केवलदर्शन
१	ध्यान	सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति
७	आँस्रव	योग ७
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

अयोगकेवली–गुणस्थान में २४ स्थान

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	काय	त्रस
०	योग	० ० ०
०	वेद	० ० ०
०	कषाय	० ० ०
१	ज्ञान	केवलज्ञान
१	संयम	यथाख्यात
१	दर्शन	केवलदर्शन
०	लेश्या	० ० ०
१	भव्यत्व	भव्यत्व
१	सम्यक्त्व	क्षायिक
०	संज्ञित्व	० ० ०
१	आहारक	अनाहारक
१	गुणस्थान	अयोगकेवली
१	जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री [द्रव्य-मन० अपेक्षा]
६	पर्याप्ति	सब
१	प्राण	आयु
०	सज्ञा	० ० ०
२	उपयोग	केवलज्ञान, केवलदर्शन
१	ध्यान	व्युपरतक्रिया-निवृत्ति
०	आस्त्रव	० ० ०
१४	लक्ष जाति	मनुष्य सम्बन्धी
१४	ल० को० कुल	मनुष्य

चौबीस ठाणा

दोहा—देव-धर्म-गुरु ग्रन्थकों, बन्दों मन-वच-काय।
गुणठाणा पर यंत्र की, रचना कहों बनाय॥

सवैया इकतीसा

गति चार, इन्द्री पाँच, काय षट् योग पन्द्रै,
वेद तीन, चौ कषाय, ज्ञान आठ सारे हैं।
संयम सात, दृग चार, लेश्या षट, भव्य दोय,
सैनी दोय, सम्यक छै, दोय ही अहारे हैं॥
गुण चौदा, जीव चौदा, प्रजा षट, प्राण दसं,
प्रत्यय सत्तावन, उपयोग भेद बारे हैं।
ध्यान सोलै, संज्ञा चार, जाति लाख चउरासी,
आधघाटी कुल दौसे, लाख कोड़ि धारे हैं॥

चौपाई

पहिलेतें चतुलग गति चार, पंचम में नर पशू विचार।
छट्ठेतें चौदम लग कही, मानुष गति इक जानों सही॥
इन्द्री पांचों हैं मिथ्यात, दूजेतें चौदम लग जात।
इक पंचेन्द्री जिनवर कही, इमि इन्द्रिय वर्णन वरणई॥
पहिले गुण षट्काय जु लसें, दूजेतैं चौदम त्रस बसे।
पहिले दूजे तेरह योग, हारक द्विक बिन जान नियोग॥
तीजे में दस इमि गिन लाय, मन वच अष्ट औदारिक काय।
वैक्रीयक मिल सब दस भये, चौथे त्रयोदस पहिले कहे॥
पंचम में मन वच वसु जान, और औदारिक मिल नव ठान।
प्रमत्त में एकादस योग, हारक द्विक युत जान नियोग॥

सप्तमतें बारम लग जान, नव पंचमवत् जान सुजान।
तेरम जोग सप्त निरधार, अनुभय सत्य, वचन मन चार॥
औदारिक औदारिकमिश्र, कार्मण मिला सप्त जु विस्त्र।
चौदम जोग भये सब क्षीण, ये जोगन की विधि परवीण॥
वेद प्रथमतें नव लग तीन, आगे वेद न जान प्रवीन।
अब कषाय को वर्णन करों, गुण-ठाणा भिन भिन उच्चरों॥

छप्पय

पहिले दूजे सर्व, मिश्र इकबीस भनीजे।
चौथे हू इकवीस, चौकड़ी प्रथम न लीजे॥
अप्रत्याख्यानी बिना, देश-संयम में सतरा।
प्रत्याख्यानी बिना, तेरें षट सत वसु इतरा॥
नौवें गुण सब सात हैं संज्वलन त्रय वेद भन।
दसवें सूक्षम लोभ इक, आगे हीन कषाय गन॥
प्रथम दुतीय कुज्ञान, तीन तीजे सु मिश्र भन।
चौथे तीन सुज्ञान, पांचवें में भी इमि गन॥
षट्तें द्वादस तईं, ज्ञान केवल बिन चारों।
तेरम-चौदम गुणस्थान, केवल इक धारों॥
इहिविधि गुण परिज्ञान को, कथन कहो जगदीशने।
अब संयम रचना कहू, जिमि सूत्तर भाषी जिने॥
पहिलेतें चतु लगै, असंयम ही इक जानो।
पंचम संयम देश, छठें सप्तम इमि जानो॥
सामायिक, छेदोपस्थाप, परिहार—विशुद्धी।
अष्टम-नव गुण दोय, नाहिं परिहार विशुद्धी॥
सांपराय-सूक्ष्म दसें, ग्यारमतें जु अयोग तक।
इक यथाख्यात ही जानिये, ये संयम सुखकर अधिक॥

पहिले दूजे दोय, चक्षु-अचक्षु भनीजे।
त्रयतें बारम तईं, अवधियुत तीन गनीजे॥
केवल तेरम चौद और, षट् लेश्या चतु लग।
पंचम-षष्टम सप्त, तीन शुभ लेश्या हर अघ॥
पुनि अष्टमतें सयोग तक, एक शुकल लेश्या कही।
गुण चौदहें सब नाशिके , जाय सिद्ध पदवी लही॥
पहिले भव्य-अभव्य, दुतियतें भवि चौदम तक।
त्रयगुण के जो नाम, तहां वो ही सम्यक् इक॥
चतु पन षट् सत मांहि, क्षाय उपशम अरु वेदक।
बसुतें ग्यारम तईं दोय, उपशम अरु क्षायिक॥
शेषन क्षायिक ही कही, सैनी-असैनी मिथ्यात में।
गुण दूजेतें चौदम तईं, इक सैनी ही सुखपात में॥

सवैया तेईसा

पहिले दूजे हार-अनहारक, तीजे हारक चौथे दोय।
पंचमतें बारम लग हारक, तेरमहार-अनहारक होय॥
चौदम एक अनहार गनीजे, गुनठाना चौदह इमि लोय।
पहिले जीवसमास सकल हैं, शेषनमें त्रस और न कोय॥
पर्यापति चौदम लग षट् हो, प्राण बारवें लग दस जान।
तेरम वच-तन-श्वास-आयुचतु, चौदम एक आयु पहिचान॥
संज्ञा कहियत षट लग चारों, सप्त अष्ट त्रय हार न ठान।
नवमें मैथुन परिग्रह दोनों, दसवें परिग्रह आगे हान॥

छप्पय

पहिले दूजे दर्श, दोय कुज्ञान तीन हैं।
मिश्र मांहिं द्वय दर्श, ज्ञान पुनि मिश्र तीन हैं॥

चतु पन षट् विज्ञान, तीन शुभरूप बखानो।
षट्ते द्वादश तईं, सप्त मनपर्यय जानो॥
तेरम चौदम दोय हैं, केवल दर्शन-ज्ञान युत।
अब कछुक ध्यान वर्णन करों, जिनशासन अनुसार॥
पहिले-दूजे अष्ट, आर्त्त-रूद्दर के जोई।
मिश्र मांहिं नव जान, धर्म का एक मिलोई॥
पुनि वृष के दुय भेद, मिलें चतु गुण ठानो।
पंचम त्रय वृष मिलें, इकादस सब पहिचानो॥
षट् आरत त्रय धर्म चऊ, सत चउ ग्यारम लग शुकल।
बारम तेरम पुनि चौदमें, क्रमतें शेष त्रिक शुकल॥
पहिले पचपन कहे, अहारक द्विक बिन जानो।
पंच मिथ्यात जु बिना, दुतिय पच्चास बखानो॥
तीजे मिश्र जु माहिं, तीन चालीस बखानो।
अव्रतगुण जिहिं नाम, तुरिय चालीस छह जानो॥
योग कषाय छ बीस, अव्रत ग्यारह पंचम में।
चौबीस योग कषाय के, प्रमत्त गिनये संच में॥
सप्तम अष्टम गुण, —स्थान बाईस जु आस्रव।
नवमें सोलह लये, दसम दस ग्यारम में नव॥
बारमवें नव जान, तेरमें सप्त गनीजे।
मन वच के दुय दोय, औदारिक युगल सु लीजे॥
कारमाण मिल सप्त ये, तेरम गुण में जानिये।
पुनि चौदम में आस्रव नहीं, यह मन-वच उर आनिये॥
चौरासी लख योनि, प्रथम गुण ठाने सारी।
दूजेंतें चौ तईं, लाख छब्बीस विचारी॥
पंचममें नर पशू, लाख अट्ठारह जानों।
षटतें चौदह तइँ, मनुष लख चौदह ठानो॥
कुलकोडि प्रथम में जान सब, दूजेतें चतुलग चऊ।
पंचम नर-पशु सकल गन, आगे मानुष जान सउ॥

दोहा

ये सब रचना पर तनी, यामें तू नहिं जीव।
तेरा दर्शन-ज्ञान गुण, तामें रहो सदीव॥

चौबीस दण्डक

दोहा

बन्दों वीर सुधीर कों, महावीर गंभीर।
वर्धमान सन्मति महा, देवदेव अतिवीर॥
गत्यागत्य प्रकाश के, गत्यागत्य व्यतीत।
अद्भुत अतिगति सुगतिजो, जैनसूर जगदीश॥
जाकी भक्तिबिना विफल, गये अनन्ते काल।
अगणित गत्यागति धरी, कटो न जग जंजाल॥
चौबीसों दंडक विषैं, धरी अनन्ती देह।
नाहीं लखियो ज्ञान-धन, शुद्ध स्वरूप विदेह॥
जिनवाणी परसादतें, लहिये आतमज्ञान।
दहिये गत्यागति सबैं, गहिये पद निर्वान॥
चौबीसों दंडकतनी, गत्यागति सुन लेव।
सुनकर विरकत भाव धरि, चहुँगति पानी देव॥

चौपाई

पहिलो दंडक नारक तनों, भवनपती दस दंडक भनों।
ज्योतिष व्यन्तर सुरगति वास, थावर पंच महादुखरास॥
विकलत्रय अरु नर तिर्यच्च, पंचेन्द्रिय धारक परपंच।
ये चौबीसों दंडक कहे, अब सुन लीजे भेद जु लहे॥
नारक की गति आगति दोय, नर तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय होय।
जाय असैनी पहिले लगै, मन बिन हिंसाकरम न पगै॥

सरीसर्प दूजे लग जांहि, तीजे लग पक्षी शक नाहिं।
सर्प जाय चौथे लग सही, नाहर पंचम आगे नहीं॥
नारी छट्टे लग ही जाय, नर अरु मच्छ सातवें थाय।
ये तौ नरकतनी गति जान, अब आगति भाषी भगवान॥
नरक सातवें को जो जीव, पशुगति ही पावे दुखदीव।
और नारकी षष्ठ सदीव, दो गति पावें नर पशु जीव॥
छट्ठे को निकसो जु कदाप, सम्यक्त्वी हौवे निष्पाप।
पंचमको निकसो मुनि होय, चौथेके केवलि हू जोय॥
तृतिय नरक को निकसो जीव, तीर्थंकर हू ह्वै जगदीव।
ये नारक की गत्यागत्य, भाषी जिनवाणी में सत्य॥
तेरह दंडक देव निकाय, तिनके भेद सुनो मन लाय।
नर तिर्यञ्च पंचेन्द्री बिना, औरन के सुरपद नहिं गिना॥
देव मरे गति पंच लहाय, भू, जल, तरुवर, नर, पशु काय।
दूजे सुरग, उपरले देव, थावर ह्वैन कहो जिनदेव॥
सहस्त्रारतें ऊँचे सुरा, मरकर होवें निश्चय नरा।
नर पशु भोगभूमि के दोय, दूजे सुरग परे नहिं होंय॥
जांय नहीं यह निश्चय कही, देवनि भोगभूमि नहिं लहो।
कर्मभूमियां नर अरु ढोर, इन बिन भोगभूमि नहिं और॥
जाँय न तातें आगति सोय, गति इनकी देवन की होय।
कर्मभूमियाँ तिर्यग सत्त, श्रावकव्रत धरि बारम गत्त॥
सहस्त्रार ऊपर तिर्यंच, जाँय नहीं ये तजि परपंच।
अव्रत सम्यक्त्वी नरमाय, बारमतें ऊपर नहिं जाय॥
अन्यमती पंचाग्री साध, भवनत्रिकतें जाय न बाध।
परिव्राजक दंडी हैं जेह, पंचम परे नाहिं उपजेह॥
परमहंस नामा परमती, सहस्त्रार ऊपर नहिं गती।
मोक्ष न पावे परमत मांहि, जैन बिना नहिं कर्म नशांहि॥

श्रावक आर्य अणुव्रत धार, बहुरि श्राविकागण अविकार।
अच्युतस्वर्ग परे नहिं जाय, ऐसो भेद कहो जिनराय॥
द्रव्यलिंग धारी जे जती, नवग्रीवक आगे नहिं गती।
बाह्याभ्यन्तर परिग्रह होय, परतछ लिंग निन्द्य है सोय॥
पंच पंचोत्तर नव नवोतरा, महामुनी बिन और न धरा।
केई बार देव जिय भयो, पै केई पद नाहीं लयो॥
इन्द्र हुवो न शचो हू भयो, लीकपाल कबहूं नहिं थयो।
लौकांतिक हूवा न कदापि, अनुतर मँह पहुँचो न कदापि॥
ये पद धरि अन पद नहिं धरे, अल्पकाल में मुक्तिहिं बरे।
है विमान सर्वारथ सिद्ध, सबतें ऊंचों अतुल जु रिद्धि॥
ताके ऊपर है शिवलोक, परे अनन्तानन्त अलोक।
गति-आगति देवन की भनी, अब सुनिलो मानुषगति तनी॥
चौबीसों दंडक के मांहिं, मनुष जाय यामें शक नाहिं।
मुक्ति हु पावे मनुष मुनीश, सकल धरा को ह्वै अवनीश॥
मुनि बिन मोक्ष न पावे और, मनुष बिना नहिं मुनि को ठौर।
सम्यग्दृष्टी जे मुनिराय, भवदधि उतरें शिवपुर जाय॥
तहां जाय अविनश्वर होय, फिर जग में आवें नहिं कोय।
रहें सासते आतम मांहिं, आतमराम भये शक नांहिं॥
गति पच्चीस कही नरतनी, आगति पुनि बाईस हि भनी।
तेजकाय अरु वात जु काय, इन बिन और सवै नर थाय॥
गति पचीस आगति बाईस, मनुषतनी भाषी जगदीश।
ता ईश्वरसम आतमरूप, ध्यावे चिदानन्द चिद्रूप॥
तो उतरे भवसागर भया, और न कोई शिवपुर लया।
ये सामान्य मनुष की कही, अब सुनो पदवीधर की सही॥
तीर्थङ्कर की आगति दोय, सुर नारकतें आवे सोय।
फेर न गति धारे जगईश, जाय विराजें जग के शीश॥

चक्री अर्ध-चक्रि वा हली, स्वर्गलोकतें आवें बली।
इनकी आगति एक हि कही, अब सुनिये जागति जू सही॥
चक्री की गति तीन बखान, स्वर्ग नरक अरु मोक्ष सुथान।
तप धारे तो सुर शिव जाय, मरे युद्ध में नरक लहाय॥
आखिर पावे पद निर्वान, पदवीधर ये पुरुष प्रधान।
बलभद्दर की जागति, सुरग जाय के ह्वै शिवपती॥
तप धारें ये निश्चय भाय, मुक्तिपात्र सूत्रन में गाय।
अर्धचक्रिको एक हि भेद, जाय नरके में लहे जु खेद॥
समर मांहि यह निश्चय मरे, तद्भव मुक्तिपंथ नहिं धरे।
आखिर पावे पद निर्वान, पदवीधारक बड़े सुजान॥
इनकी आगति सुरगति जान, गति नरकन की कही बखान।
आखिर पावें पद शिवलोक, पुरुष शलाका शिव के थोक॥
ये पद पाय सु जग के जीव, अल्पकाल में ह्वै जगपीव।
और हु पद कोई ना गहे, कुलकर नारद हू नहिं लहे॥
रुद्र भये ना मदन हु भये, जिनवर, तात मात नहिं थये।
ये पद पाय रुलें नहिं जीव, थोरे दिन में ह्वै शिवपीव॥
इनकी आगति श्रुततें जान, जागति रीति कहूं जु बखान।
कुलकर देवलोक ही जाय, कलह कलंक महादुखदाय।
जन्मान्तर पावें निर्वान, बड़े पुरुष ये सूत्र प्रमान॥
तीर्थकर के पिता प्रसिद्ध, स्वर्ग जांय कै होवें सिद्ध।
माता स्वर्गलोक ही जाय, आखिर शिवसुख वेग लहाय॥
ये सब रीति मनुज की कही, अब सुनि तिर्यगगति की सही।
पञ्चेन्द्री पशु मरण कराय, चौबीसों दंडक में जाय॥
चौबीसों दंडकतें मरे, पशू होय तो हानि न परे।
गति आगति वरणी चौबीस, पंचेन्द्री पशु की जगदीश॥
ता परमेश्वर को पथ गहो, चौबीसों दंडक को दहो।

विकलत्रय की दस ही गती, दस आगति भाषी जिनपती ॥
थावर पंच विकलत्रय तीन, नर तिर्यञ्च पञ्चेन्द्री लीन ।
इन ही दस में उपजे आय, इनहीतैं विकलत्रय थाय ॥
नारक बिन दंडक है जोय, पृथ्वी पानी तरुवर होय ।
तेज वायु मरि नव में जाय, मनुष्य होय नाहिं, सूत्र कहाय ॥
थावर पंच विकलत्रय ढोर, ये नवगति भाषी मदमोर ।
दसतें आय तेज अरु वाय, होय सही गावें जिनराय ॥
ये चौबीसों दंडक कहे, इनको त्याग परमपद लहे ।
इनमें रुले, सो जग को जीव, इनसे तिरे सो त्रिभुवन पीव ॥
जीव ईश में और न भेद, ये कर्मी, वे कर्म उछेद ।
कर्मबंध जौलों जगजंत, नाशत कर्म होय भगवंत ॥

दोहा

मिथ्या अव्रत जोग अरु, मद परमाद कषाय ।
इन्द्री विषय जु त्यागिये, भ्रमण दूर हो जाय ॥
जिन बिन गति बहुतै धरी, भयो नहीं सुलझार ।
जिन मारग उर धारिके, लहिये भवदधि पार ॥
जिन भज सब परपंच तज, बड़ी बात है येह ।
पंच महाव्रत धारिके, भवजलकों जल देह ॥
अन्तःकरण जु शुद्ध ह्वै, जिनधरमी अभिराम ।
भाषा भविजन कारणें, भाषी दौलतराम ॥

ग्रन्थ समाप्त